B-III
L- 08
MIH

उत्तर पश्चिम में साम्राज्य विस्तार

नोट: जान लारेंस - कुशल अकर्मण्यता की नीति अधिक चर्चा में थी।

सिंध विलय/विजय - 1843

- मुगलों के कमजोर होने के पश्चात सिंध पर अमीरों का शासन स्थापित हुआ।
- 1809 ई. में अंग्रेजों एवं सिंध के बीच एक मित्रता की सन्धि हुई जिसमें यह प्रावधान था कि फ्रांसीसियों को सिंध की सीमा में बसने नही दिया जायेगा।
- 1832 में कम्पनी और सिंध के बीच व्यापारिक सन्धि हुई।
- 1839 में सिंध ने सहायक सन्धि पर हस्ताक्षर किया। अफगानिस्तान युद्ध में सिंध ने कंपनी को सहयोग भी दिया
- सिंध ने सभी संधियो का पालन किया फिर भी 1843 में नेपियर के द्वारा सिंध को जीत लिया गया।

KGS IAS

कारण

- प्रथम अफगान युद्ध के पश्चात अंग्रेजों की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची थी इस प्रतिष्ठा की भरपाई के लिए सिंध को जीतना आवश्यक समझा गया।

- रूस से खतरा अभी भी बना हुआ था भविष्य में अफगानिस्तान एवं रूस दोनों के साथ टकराव की स्थिति में सिंध का महत्व था।

- पंजाब के विरुद्ध युद्ध के स्थिति में भी सिंध की उपयोगिता थी।

- सिंध की सीमा समुद्र से लगती थी इस दृष्टिकोण से भी (नौ सेना एवं व्यापार) सिंध का महत्व था।

- भू राजस्व बाजार एवं कच्चे माल के दृष्टिकोण से भी सिंध उपयोगी था।

पंजाब विलय

- 18वीं सदी में विभिन्न कारणों से पंजाब राजनीतिक अस्थिरता का शिकार रहा है जैसे- मुगल सिख संघर्ष, नादिर शाह एवं

अब्दाली का आक्रमण, मराठों के आक्रमण इत्यादि।

- 1790 के दशक में सुकरचकिया मिस्ल के रणजीत सिंह ने धीरे-धीरे साम्राज्य का विस्तार किया इसके साम्राज्य में वर्तमान पाकिस्तान में एक बड़ा भू-भाग, भारतीय पंजाब का बड़ा भू-भाग एवं हिमाचल तथा कश्मीर का भी क्षेत्र शामिल था।
- लगभग चार-पांच दशकों तक पंजाब में राजनीतिक स्थिरता को रणजीत सिंह ने बनाए रखा।
- समकालीन दो शक्तिशाली शक्तियों से अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखा (कम्पनी एवं अफगान)।
- सिख धर्म के अनुयायी होने के बावजूद प्रशासन में धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया बल्कि योग्य लोगों को महत्वपूर्ण पदों पर रखा
- प्रशासन पर मुगल प्रशासक का अधिकाधिक प्रभाव।
- दो अन्य कारणों से रणजीत सिंह की विशेष तौर पर चर्चा होती है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning
KHAN SIR

1. विशाल एवं आधुनिक सेना का गठन—
सेना में यूरोप के विभिन्न देशों के नागरिकों को भी शामिल किया जैसे फ्रांसीसी, जर्मन,
अमृतसर एवं लाहौर में तोप बनाने का कारखाना लगाया।

• सेना को यूरोपीय मॉडल के आधार पर प्रशिक्षित किया

2. अंग्रेजों से कूटनीतिक संबंधों को लेकर भी चर्चा होती है।
• 1809 ई. में रणजीत सिंह एवं कम्पनी के बीच अमृतसर की सन्धि या मित्रता की सन्धि हुई।
• सतलज नदी को दोनों की सीमा मानी गई।

• रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात इनका साम्राज्य दस वर्षों के भीतर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

रणजीत सिंह के पश्चात

खड़कसिंह, नौनिहाल सिंह, शेर सिंह,
दिलीप सिंह
└ 1943 में शासक
संरक्षण - माँ-रानी जिंदा

- प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध - 1845-46:

कारण - कम्पनी की महत्वाकांक्षा
- पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता, गुटबंदी;
- कम्पनी के द्वारा सिखों को युद्ध के लिए उकसाना।

परिणाम :-
- सिखों की पराजय, इसका एक मुख्य कारण था - लालसिंह (वजीर) और तेजसिंह (सेनापति) की गद्दारी।
- 1846 में लाहौर की सन्धि एवं भैरोवाल की सन्धि की गई। (सहायक सन्धि की तरह)

द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध - 1848 - 49 :-

कारण :-

- कम्पनी की महत्वाकांक्षा एवं कुछ अधिकारियों का विद्रोह जैसे - मूलराज, चतुर सिंह।
- सिखों की पराजय एवं पंजाब का विलय ब्रिटिश साम्राज्य में कर लिया गया।

नोट :-

- अंग्रेजों का अफगान से युद्ध हुआ था।
- अंग्रेजों का नेपाल से युद्ध - (1814-16)
  उत्तराखंड का एक बड़ा भू-भाग
- बर्मा से युद्ध - इसमें तीन युद्ध -
  (i) 1824-26 - उ० पूर्वी भारत में बर्मा के विस्तार को अंग्रेजों ने रोका।
  (ii) 1852 में द्वितीय युद्ध - दक्षिणी बर्मा का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय।
  (iii) 1885 - तृतीय युद्ध - सम्पूर्ण बर्मा पर अंग्रेजों का नियंत्रण स्थापित हुआ।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

डलहौजी एवं साम्राज्य विस्तार (1848-56)

- भारत में सर्वाधिक विस्तार डलहौजी के कार्य-काल में हुआ।
- डलहौजी जब भारत आया था तब ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर मंदी का प्रभाव बढ़ने लगा था और ब्रिटिश उद्योगपतियों के द्वारा भारत में पूँजी निवेश की योजना बनाई जा रही थी। इन सब के लिए आवश्यक माना जा रहा था कि भारत के अधिक-से-अधिक भागों पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष शासन हो और डलहौजी विस्तार से संबंधित किसी भी अवसर को छोड़ना नहीं चाहता था।
- युद्ध के द्वारा विस्तार :-

1849 में पंजाब का विलय
1850 में सिक्किम का विलय
1852 में दक्षिणी बर्मा का विलय

युद्ध के बिना विस्तार :-

- 1853 में निजाम से बरार का क्षेत्र लिया गया।
- 1856 में कुशासन के नाम पर अवध का विलय किया गया।

अवध के नवाब थे - वाजिद अली शाह।

गोद निषेध नीति (Doctrine of Lapse)

- जो राज्य अंग्रेजों पर आश्रित थे कम्पनी की अनुमति के बिना गोद लेकर किसी को उत्तराधिकारी घोषित नहीं कर सकते थे।
- डलहौजी ने इस नीति को आधार बनाते हुए कई राज्यों का विलय किया जैसे-

सतारा - 1848
झांसी - 1853
नागपुर - 1859
इत्यादि

(डलहौजी से पूर्व भी इस नीति को आधार बनाते हुए राज्यों का विलय किया गया था)

अन्य -

- बाजीराव द्वितीय के मृत्यु के पश्चात इनके दत्तक पुत्र नाना साहेब का पेंशन बंद कर दिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

- कर्नाटक एवं तंजौर के शासक को उपाधि धारण करने से रोका गया।
- मुगल शासक के उत्तराधिकारी लाल किले से बाहर रहेंगे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR